परमात्म यज्ञ(कार्य) की सम्भाल

परमात्मा के यज्ञ से जो भी हम उपयोग करते हैं तो उसका भी हिसाब तो होता ही है ना! अगर सही तरह से नहीं किया तो उसका हमारे ऊपर बोझ चढ़ता है, लेकिन वो तभी चढ़ता है जब हम उसको सिर्फ और सिर्फ यूज़ करते हैं। परमात्मा के कार्य में सौ प्रतिशत सहयोग देने का अर्थ यही है कि हम सभी ट्रस्टी हैं। उसने हमें दिया है, हम सिर्फ सम्भाल रहे हैं। लेकिन अगर इस यज्ञ से कुछ भी उठा रहे हैं, किसी भी चीज़ को देखकर हमारे अंदर लोभ-लालच पैदा हो रहा है तो हम ट्रस्टी नहीं कहे जायेंगे। इसलिए सम्भल के यहां की एक-एक चीज़ का इस्तेमाल करें।

हम सभी जब किसी मंदिर में जाते हैं तो भी कुछ न कुछ उस भंडारी में डालते हैं, उसके बाद प्रसाद खाते हैं, वापस आते हैं। अब किसने देखा कि आपने क्या डाला, लेकिन ऐसा मन करता है कि नहीं ऐसे ही मुझे यहां से कुछ नहीं लेना है, कुछ न कुछ करना है। कहावत भी है, 'देयर इज़ नो फ्री लंच इन द वर्ल्ड', माना इस दुनिया में कुछ भी फ्री नहीं मिलता, कुछ न कुछ उसका एवजा आपको देना पड़ता है। इसलिए परमात्मा का जो इतना विशाल कार्य चल रहा है, उसमें इतनी जो भी वस्तुएं या अन्य सामग्री आती है वो परमात्मा के उन अनन्य बच्चों के धन से आती है जो सिर्फ और सिर्फ मेहनत से कमाते हैं और इसके लिए ही सबकुछ करते हैं। तो इसमें हम सभी की क्या भूमिका होनी चाहिए? जो भी भंडारा है या भंडारी है, दोनों के प्रति हम सबकी ज़िम्मेवारी बढ़ जाती है।

ये तो ज़ाहिर ही है कि कुछ लोग पूरी तरह से परमात्मा के कार्य में अपने जीवन को लगा देते हैं, वो तो बाहर नहीं जाते हैं धन कमाने, वो सिर्फ और सिर्फ सम्भालने के लिए हैं। और कुछ अपने समय अनुसार सेवा देते हैं। आपको ये ज्ञात हो कि जब कोई चीज़ हमको फ्री में मिलती है तो उसकी वैल्यू कुछ दिन में हम समझ नहीं पाते। लौकिक दुनिया में हर दिन अपने खर्चे को बचाने के लिए लोग मोलभाव करते हैं, कहते कि आज सब्जी इतनी महंगी हो गई, दाल इतनी महंगी हो गई, कैसे खाएं! लेकिन यहां तो सबकुछ सामने पड़ा है। इतनी वैरायटी दुनिया में हमें कहीं भी नहीं मिलती जितनी इस यज्ञ में हमें देखने को मिलती है। ईश्वर का समझकर उसको उपयोग में लाने से, परमात्मा की याद में उसे खाने से वो अन्न प्रसाद के रूप में हमारे तन को लगता है। लेकिन कई बार लोग ये भी कहते हैं कि आप तो भगवान के घर का खाते हैं फिर भी आप बीमार रहते हैं! उनका ये प्रश्न लाज़मी है। हम परमात्मा के घर में रहकर उसे खाने के बाद भी शायद इसलिए बीमार पड़ते हैं क्योंकि उसको खाने का भाव सिर्फ खाने का है, जीने का नहीं। यहां जीने का अर्थ है कि मैं तो सिर्फ शरीर को चलाने हेतु भोजन का उपयोग करता हूँ ना कि हबच से, लोभ से।

जब हम लोभवश बहुत सारी चीज़ें खाते भी हैं और उसे उठाकर घर भी ले जाते हैं थोड़ा तो वो अन्न या फल स्वास्थ्यकर नहीं होगा। क्योंकि भाव दूसरा है ना, इसलिए वो अन्न हमारे शरीर में बीमारियां पैदा करेगा। वो अन्न लगेगा नहीं तन को। चलो हम धन कमाते नहीं हैं, लेकिन और कार्यों में तन, मन का सहयोग तो दे सकते हैं ना उसे बचाकर, बचत करके। जैसे बिजली कहीं एक्स्ट्रा जल रही है तो उसको बंद कर दिया, कहीं नल से पानी ऐसे ही बह रहा है तो उसे बंद कर दिया, गैस वेस्ट न हो। कोई भी अप्लायंस(उपकरण) को चलता छोड़ दिया है तो उसको ठीक रखना, कोई चीज़ खराब पड़ी है उसको ठीक करवाना। परमात्मा हम सबको शिक्षा देते हैं कि खान-पान न तो बहुत रॉयल हो और न ही बहुत नीचे का हो, बीच का हो। इसीलिए इतना शुद्ध बना हुआ, परमात्मा की याद में बना भोजन खाने पर भी उसके प्रति हमारा भाव सिर्फ खाने का होने के कारण हमारा शरीर उस प्रकार कार्य नहीं करता जैसा करना चाहिए। बड़ी सूक्ष्म धारणा है कि अगर हमें कुछ मिल रहा है तो उसको लेने से पहले उसका दस गुणा हमको देना पड़ेगा।

जैसे दुनिया में भी अगर कोई किसी को दस लाख रुपये सालाना दे रहा है तो उससे डेढ़-दो करोड़ का काम भी ले रहा है। ऐसे ही नहीं कोई सैलरी दे देता है। इसलिए इस कार्य में सुबह की दिनचर्या से लेकर शाम तक जो कुछ भी हमने स्थूल रूप से, जो शरीर से सम्बंधित चीज़ें हैं उससे और मन-बुद्धि से लोभ-लालच से जो कर्म किये होते हैं उससे ही हमारी सैलरी बनती है। इसलिए मसला सिर्फ इतना है कि यज्ञ ज़रूर हम सभी का है लेकिन जब तक उसकी सही रीति से सम्भाल न हो तब तक हम सिर्फ उसको यूज़ कर रहे हैं। क्योंकि इन सबके पीछे अनेक योगी आत्माओं के द्वारा दिया गया पैसा है, उसका हमारे ऊपर बोझ चढ़ता है, लेकिन वो तभी चढ़ता है जब हम उसको सिर्फ और सिर्फ यूज़ करते हैं। परमात्मा के कार्य में सौ प्रतिशत सहयोग देने का अर्थ यही है कि हम सभी ट्रस्टी हैं। उसने हमें दिया है, हम सिर्फ सम्भाल रहे हैं। लेकिन अगर इस यज्ञ से कुछ भी उठा रहे हैं, किसी भी चीज़ को देखकर हमारे अंदर लोभ-लालच पैदा हो रहा है तो हम ट्रस्टी नहीं कहे जायेंगे। इसलिए सम्भल के यहां की एक-एक चीज़ का इस्तेमाल करें। यही परमात्मा के कार्य में हमारा सौ प्रतिशत योगदान होगा।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मृत्यु के बाद की स्थिति वास्तव में है क्या?

उत्तर : आत्मा एक देह रूपी वस्त्र उतारकर दूसरा धारण कर लेती है। मृत्यु हुई, आत्मा गर्भ में प्रवेश करेगी। गर्भ में जो बच्चा है वो चार-पाँच मास का हो गया होगा तब आत्मा उसमें प्रवेश करेगी। और प्रवेश करने के बाद ब्रेन का और अंगों का तेजी से विकास हो जायेगा। लेकिन आत्मा यहाँ से अपने सारे संस्कार और कर्म साथ लेकर जाती है। क्योंकि आत्मा जब देह छोड़ती है तो उसका सूक्ष्म शरीर भी उसके साथ चलता है। सूक्ष्म शरीर भी बिल्कुल ऐसे ही होता है जैसे ये शरीर होता है। बस वो लाइट का होता है। मन, बुद्धि, संस्कार कर्मों का सारा इफेक्ट उसमें रहता है। उसके साथ आत्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।

तो जैसे-जैसे जिसके कर्म और वैसा शरीर का निर्माण, वैसा ब्रेन का निर्माण, अनेक चीज़ें हैं मनुष्यों के अन्दर आप देख सकते हैं। हरेक का चेहरा अलग, आँखें अलग, नाक अलग, कोई बहुत ही स्ट्रॉन्ग, कोई पतला-दुबला, कोई जन्म से ही बीमार तो जिसके बहुत पाप कर्म हैं उसकी ऐसी स्थिति होती है, ये जानने योग्य विषय है। मान लो किसी ने पाँच-सात साल बहुत भयानक रूप से कैंसर से पीड़ित रहकर देह छोड़ा, ये सब आजकल बहुत हो रहे हैं। और कैंसर की याद में ही उसका देह छूट गया। तो कैंसर के संकल्प उसके मन में थे, किसी भी तरह के उल्टे-सीधे मुझे कैंसर था, मेरे कैसे पाप थे, हाय ये ठीक नहीं हो रहा, मेरा क्या होगा तो मन उन सबको साथ लेकर नई देह में प्रवेश करता है। अभी नये बच्चे में इसलिए वो सब वायरस कहें या वो सब संस्कार कहें जो भी मेडिकल वाले इसको जो भी नाम दें बच्चे के शरीर में वहीं से पड़ जाते हैं। उनके वायब्रेशन्स के कारण। तो जैसे वो बड़ा होगा छोटी आयु में ही कैंसर का रोग उसमें दिखाई देगा।

आजकल तो देखो ऐसे केस आ रहे हैं। दो साल के बच्चे, पाँच साल के बच्चे कैंसर से पीड़ित, डायबिटीज से पीड़ित, हार्ट पेशेन्ट, हार्ट में छेद, किडनी दोनों कमज़ोर, लीवर बहुत वीक, ब्रेन बहुत डल, ये सब स्थिति आ रही है तो ये सब पूर्व जन्मों की जो स्थिति रही है मनुष्य की, जो कर्म रहे हैं, जो संस्कार रहे हैं, गहरी छाप गर्भ से ही उस देह पर पड़ जाती है। उसके साथ बच्चे का जन्म होता है। जैसे मेडिकल में हेरीडिटरी(वंशानुगत) कहते हैं ना कि दादा-दादी से रोग आये हैं। पूर्व जन्मों से भी रोग आते हैं इसलिए कुछ लोग जो इस चीज़ के विशेषज्ञ हैं पूर्व जन्मों में जाकर उनको उस रोग से मुक्त कर देते हैं। ये भी एक बहुत बड़ी विद्या है। तो इस तरह अलग-अलग जगह पर, अलग-अलग परिवारों में कोई धनवान के घर, कोई गरीब के घर, कोई जन्मते ही बीमार, कोई बहुत स्वस्थ, कोई जन्म से ही बहुत बुद्धिमान, कोई की बुद्धि डल, कोई बहुत योग्य तो कोई बहुत कम योग्य। वो सब संस्कार, बुद्धि, मन के वायब्रेशन्स लेकर आत्मा दूसरे देह में प्रवेश करती है। उसी तरह का उसका नया जन्म होता है।

ये भी जानने योग्य है कि आत्मा कभी मेल शरीर में प्रवेश करती है तो कभी फीमेल शरीर में। आत्मा ना मेल है ना फीमेल। फिर भी इसको शास्त्रों में पुरूष कहा गया है। मेल रूप में इसको देखा गया। परंतु ये जो जेन्डर हैं, लिंग हैं इन दोनों से परे है। वो आत्मा एक जन्म नर के रूप में, दूसरा जन्म नारी के रूप में। और कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है दो जन्म एक साथ एक ही योनि में हो जायें। दो बार पुरूष बन जायें, या दो बार स्त्री बन जायें, इसके ज़्यादा नहीं। अन्यथा हर बार चेंज होता रहेगा। कभी-कभी ऐसा होता है कि पुरूष के संस्कार अति प्रबल हैं तो दूसरा जन्म भी पुरूष के रूप में हो जायेगा। बस ये अगले जन्म में स्थिति बनती है।

प्रश्न : मरने के बाद क्या होता ये किसने देखा? क्या मरने के बाद किसी ने आकर बताया कि हम स्वर्ग में गये थे, नर्क में गये थे। ये तो लोग कल्पना मानते हैं और ये मानते हैं कि डराने के लिए ये बात कही गई थी। इस विषय पर आप क्या टिप्पणी करेंगे जो लोग ऐसा मानते हैं कि स्वर्ग, नर्क जैसी कोई चीज़ ही नहीं होती?

उत्तर : हाँ स्वर्ग, नर्क की तो बात नहीं लेकिन मैंने भी एक बुक मेरे पास आई कि 'मृत्यु के बाद क्या' तो जो लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये थे वो पाँच मिनट बाद वापिस आ गये। माना देह फिर से जीवित हो गयी। इसमें वन्डरफुल बात ये थी कि सबके अनुभव एक जैसे थे कि वो कहाँ से पास हुए, कौन उन्हें मिला, क्या बातचीत हुई और कैसे वो आ गये नीचे। वो सब उन्होंने सुनाये लगभग एक जैसे। तो कल्पना तो नहीं माना जा सकता। उसमें कई अच्छे-अच्छे लोग भी थे, डॉक्टर्स थे, प्रोफेसर्स थे, ऐसे-ऐसे लोगों के अनुभव थे। 100 लोगों के अनुभव छपे हुए हैं। दूसरी हमारे भारत में भी जहाँ-तहाँ एक घटना होती रहती है। कि कुछ बच्चे दो साल के, तीन साल के वो बोलना सीखते हैं ना तो वो अपने पूर्व जन्म का बखान करने लगते हैं। अरे मेरी माँ कहाँ है, उसका नाम ये है, मुझे वहाँ ले चलो। मैं यहाँ कहाँ आ गया, मेरा तो घर वहाँ है। और जब लोग वहाँ जाके पता करते हैं तो वो एकदम सही निकलता है। सच निकलता है। उसमें संशय की कोई गुंजाइश ही नहीं। अनेक वैज्ञानिक वहाँ पहुंचे, मनोवैज्ञानिक वहाँ पहुंचे। सबने इसकी जाँच की। तो पुनर्जन्म तो एक सत्यता है। वास्तव में ये कल्पनायें नहीं हैं, पुनर्जन्म होता है।

मृत्यु के बाद किसने देखा है, देखा है हम सबने। हम उसे भूल गये हैं। मृत्यु सबकी हुई है। सब उस अनुभव से गुज़रे हैं लेकिन इस संसार के वातावरण में, यहाँ के वायब्रेशन्स में, यहाँ की मोह-ममता में मनुष्य को सबकुछ विस्मृत होता रहता है। और विस्मृत होना ही कल्याणकारी है। सबकुछ याद रहे तो मनुष्य पागल ही हो जायेगा। इसलिए भूलने में बड़ा भला है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल